*शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)*
***UGC Aproved Journal No. 40908***

# प्रसाद के काव्य में पुनर्जागरण और राष्ट्रीय–चेतना

**डा० कल्पना माहेश्वरी**
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
ए०के०पी० (पी०जी०) कॉलेज, खुर्जा (बुलन्दशहर) उ०प्र०

***सारांश***

*भारतीय इतिहास और संस्कृति के प्रति अनुराग के मूल में प्रसाद की राष्ट्रीय भावना ही चेतन है। वह एक ऐसे युग में विकास पा रहे थे जबकि देश दासता की कारा से मुक्त होने का प्रयत्न कर रहा था। अन्य रचनाकारों की भांति उन्होंने भी इसमें सहयोग दिया। उनकी राष्ट्रीय–भावना देश प्रेम की भित्ति पर खड़ी है, वह साधारणतः राष्ट्रीयतावादी कवि से किंचित भिन्न है, उसमें व्यापकता है, बाह्य और आन्तरिक दोनों के योग से समन्वित राष्ट्रीयता भावना अपने प्रशस्त रूप में जन्म लेती है जिसमें युग चेतना के साथ ही राष्ट्र की सांस्कृतिक और सौन्दर्य चेतना भी समाहित होती है। ''बाह्य सत्ता के अन्तर्गत राष्ट्र की भौगोलिक सीमायें, प्राकृतिक सौन्दर्य तथा नागरिकों के प्रति सहज सम्बन्धों की परिकल्पना विद्यमान रहती है। आन्तरिक सत्ता के अन्तर्गत राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना, दार्शनिक आध्यात्मिक तथा साहित्यिक गरिमा का महत्व होता है।''[2] साथ ही अपने व्यावहारिक पक्ष में वह जनमन की नवीन प्रेरणाओं, नव स्फूर्ति और सक्रियता की सृष्टि भी करती रही है। उसका यह प्रशस्त स्वरूप अपनी प्रगतिशीलता में अक्षुण्ण है। अपने आंशिक स्वरूप में राष्ट्रीय चेतना देश की बहिर्मुखी प्रगति के लिये प्रयत्नशील है। देश में स्वतन्त्रता के लिये विद्रोह, संघर्ष मात्र राजनीतिगत लक्षण था। परन्तु मानव जीवन में न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व आदि की मांगे राष्ट्रीय चेतना का अत्यन्त महत्वपूर्ण पहलू है। मनुष्य की रागात्मक वष्त्ति के विकास क्रम में वैयक्ति धरातल से उठकर परिवार, ग्राम, प्रदेश, देश और विश्व तक अपना सम्बन्ध जोड़ना अर्थात ''स्व'' से ऊपर उठकर पर को महत्व देना है, यही मनुष्य विश्व मानव की व्यापक परिधि में आ जाता है। साहित्य एक सांस्कृतिक प्रतिक्रिया है और सांस्कृतिक विकास इन्हीं सोपानों से होता हुआ अपने चरमादर्श पर पहुंचता है, सामान्य हित की गहन और अनुभूतिक चेतना ही व्यक्ति को इस दिशा में प्रेरित करती है।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः
**डा० कल्पना माहेश्वरी**

*प्रसाद के काव्य में पुनर्जागरण और राष्ट्रीय–चेतना*

शोध मंथन,
दिस0 2017,
पेज सं0 149–154
Artcile No. 23 (SM 664)
http://
anubooks.com?page_id=581

''काव्य घटनाओं का इतिहास नहीं, जातीय मनोवृत्तियों का प्रतिबिम्ब होता है। राजनीति, काव्य को प्रचार का वाहन बनाकर स्वयं तो ''प्रगति'' कर लेती है पर काव्य की अति दुर्गति ही हो जाती है। समय साहित्य में झांकता अवश्य है पर वह अपना आन्तरिक स्पन्दन लेकर ही उसमें आता है, विशेषतः काव्य में तो वह व्यापक सामान्य मनोभावों के साथ ही तरंगित होता है।''[1] जागरूक और प्रगतिशील रचनाकार अपनी वैयक्तिक भूमिका पर रहते हुए भी तत्कालीन परिस्थितियों से प्रेरित अवश्य रहता है, वह अपने परिवेश की उपेक्षा नहीं कर सकता। युग की विसंगतियां और राष्ट्रीय सामाजिक विश्रंखलन ही उसके व्यक्तिगत भावों को जन्म देते है। प्रसाद जी भी इससे अछूते नहीं रहे। उनके युग की विसंगतियों ने उन्हें प्रेरणा देकर उनकी सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना को उभार दिया, स्वस्थ गति दी। प्रसाद जी भारतीय इतिहास और संस्कृति के परम अनुरागी थे उन्होंने इतिहास और संस्कृति के परिचायक वेदों–पुराणों और उपनिषदों का गहन अध्ययन किया था।

भारतीय इतिहास और संस्कृति के प्रति अनुराग के मूल में प्रसाद की राष्ट्रीय भावना ही चेतन है। वह एक ऐसे युग में विकास पा रहे थे जबकि देश दासता की कारा से मुक्त होने का प्रयत्न कर रहा था। अन्य रचनाकारों की भांति उन्होंने भी इसमें सहयोग दिया। उनकी राष्ट्रीय–भावना देश प्रेम की भित्ति पर खड़ी है, वह साधारणतः राष्ट्रीयतावादी कवि से किंचित भिन्न है, उसमें व्यापकता है, बाह्य और आन्तरिक दोनों के योग से समन्वित राष्ट्रीयता भावना अपने प्रशस्त रूप में जन्म लेती है जिसमें युग चेतना के साथ ही राष्ट्र की सांस्कृतिक और सौन्दर्य चेतना भी समाहित होती है। ''बाह्य सत्ता के अन्तर्गत राष्ट्र की भौगोलिक सीमायें, प्राकृतिक सौन्दर्य तथा नागरिकों के प्रति सहज सम्बन्धों की परिकल्पना विद्यमान रहती है। आन्तरिक सत्ता के अन्तर्गत राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना, दार्शनिक आध्यात्मिक तथा साहित्यिक गरिमा का महत्व होता है।''[2] साथ ही अपने व्यावहारिक पक्ष में वह जनमन की नवीन प्रेरणाओं, नव स्फूर्ति और सक्रियता की सृष्टि भी करती रही है। उसका यह प्रशस्त स्वरूप अपनी प्रगतिशीलता में अक्षुष्ण है। अपने आंशिक स्वरूप में राष्ट्रीय चेतना देश की बहिर्मुखी प्रगति के लिये प्रयत्नशील है। देश में स्वतन्त्रता के लिये विद्रोह, संघर्ष मात्र राजनीतिगत लक्षण था। परन्तु मानव जीवन में न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व आदि की मांगे राष्ट्रीय चेतना का अत्यन्त महत्वपूर्ण पहलू है। मनुष्य की रागात्मक वर्षत्ति के विकास क्रम में वैयक्ति धरातल से उठकर परिवार, ग्राम, प्रदेश, देश और विश्व तक अपना सम्बन्ध जोड़ना अर्थात ''स्व'' से ऊपर उठकर पर को महत्व देना है, यही मनुष्य विश्व मानव की व्यापक परिधि में आ जाता है। साहित्य एक सांस्कृतिक प्रतिक्रिया है और सांस्कृतिक विकास इन्हीं सोपानों से होता हुआ अपने चरमादर्श पर पहुंचता है, सामान्य हित की गहन और अनुभूतिक चेतना ही व्यक्ति को इस दिशा में प्रेरित करती है।

प्रसाद जी का दृष्टिकोण सांस्कृतिक अधिक है वे किसी क्रांतिकारी की भांति उद्‌बोधन गीत नहीं गाने लगते किन्तु क्रमशः राष्ट्र की संस्कृति और गौरवमय परम्परा के चित्रण से युक्त स्थिति की परियोजना अवश्य करते है। देश प्रेम सम्बन्धी उदात्त भावनायें और सांस्कृतिक गौरव रक्षा के लिये कल्याण कामना उनके काव्य में स्पष्ट परिलक्षित होती है। राष्ट्रीयता के भावात्मक और रागात्मक स्वरूप के उत्तरोत्तर विकास को ही उन्होंने प्रमुखता दी है और इसी परिधि में ही अतीत के सुन्दर और प्रेरक देश प्रेम सम्बन्धी मधुर गीतों और कविताओं की सृष्टि की। कुछ गीतों में परम्परागत राष्ट्रीय, सांस्कृतिक भित्ति पर ओजपूर्ण स्वरों में राष्ट्रीयता का संधान किया है इससे प्रमाणित होता है कि छायावादी काव्य प्रमुखतः प्रसाद

काव्य का राष्ट्रीय जागरण से अभिन्न सम्बन्ध रहा है वस्तुतः छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो एक ओर प्रगति में बाधक रूढ़ परम्पराओं से मुक्ति चाहता था तो दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से जागरण में विकास के साथ ही काव्यात्मक अभिव्यक्ति और छायावाद में अर्थ की व्यापकता आती गयी। अब कविता भाव सत्ता के गहन स्तर पर सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति और समकालीन परिस्थितियों की छाया के रूप में आकार पाने लगी।

प्रसाद ने भारत के गौरवमय अतीत का सहारा लेकर पुनरूत्थान परक गीत सृष्टि द्वारा राष्ट्रीय जागरण का शुभारम्भ किया। प्रसाद भारतीय इतिहास के निगूढ़ अध्येता थे। अतीत की गौरवमयी भारतीय संस्कृति का उन्हें पूर्ण परिचय था। आत्म गौरव का ओजस्वी उद्बोधन देकर उन्होंने वर्तमान पराधीन देश की सुप्त चेतना को नवीन जाग्रति के स्वर दिये। अतीत की सुन्दर नियोजित पृष्ठ भूमि पर विजय की आकांक्षा लेकर उन्होंने विभाजित जातीय भावना को एक सूत्र में बांधने का स्तुत्य प्रयास किया। अपने युग की उलझने सुलझाने के लिये उन्होंने अतीत की स्वस्थर परम्पराओं से प्रेरणा ग्रहण की। व्यावहारिक जीवन के विविध स्वरूपों पर दृष्टि रखते हुये उन्होंने भारतीय संस्कृति के गौरव का उद्घाटन किया अतीत का वर्तमान से और यथार्थ का आदर्श से सामंजस्य करते हुये उन्होंने मानवतावादी भूमिका प्रस्तुत की। उनके राष्ट्रीय भावना सम्पन्न गीत मानवीयता की उच्च भूमि पर अवस्थित है। मानवीय प्रेम की विराट भावना देशप्रेम की संकीर्ण परिधि से उठकर विस्तृत गगन पर प्रसार पा गयी है। सूक्ष्म भावात्मक व्यापकता के साथ सिल्यूकस की पुत्री कार्नेलिया का यह गीत अद्भुत है–

''अरूण यह मधुमय देश हमारा
जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा
लघु सुरधनु से पंख पसारे
शीतल मलय समीर सहारे
उड़ते खग जिस ओर मुंह किये समझ नीड़ निज ज्यारा।
बरसाती आंखो के बादल
बनतेजहां भरे करूणा जल
लहरें टकराती अनन्त की पाकर जहां किनारा।''[3]

इस गीत की विशेषता यह है कि इमसें भारत के भौगोलिक स्वरूप का वर्णन कर वंदना नहीं की गयी अपितु इसमें उन भावनाओं और आदर्शो के स्वर ध्वनित हो रहे है जोकि भारत ही नहीं सम्पूर्ण मानव जाति की गरिमा के योग्य है। इसे सभी वर्गो सभी देशों के मनुष्य समान आत्मीयता से गुनगुना सकते है। ग्रीक युवती कार्नेलिया द्वारा इसका गायन यह व्यंजित करता है कि वह भी भारतीय संस्कृति के गौरवमय रूप पर आसक्त है वह भी मानवता की जन्म भूमि भारत का अर्चन करती है।

चन्द्रगुप्त के कुछ गीत प्रसाद के सर्वश्रेष्ठ गीत है उनमें जिस भारत की छवि है यह सभी युगों में हमें प्रेरणा देती रहेगी। चन्द्रगुप्त का एक उद्बोधन गीत –

''हिमाद्रि तुम श्रंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती

स्वयं प्रभा समुज्ज्वता स्वतंत्रता पुकारती
अभंत्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञा सोच तो
प्रशस्त पुण्य पंथे है बढ़े चलो बढ़े चलो।''[4]

स्कन्दगुप्त का यह गीत अद्‌वितीय है–

''हिमालय के आंगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार
उषा ने हंस अभिनंदन किया और पहनाया हीरक हार।
जगे हम, लगे जगाने विश्व लोक में फिर फेला आलोक
व्योम तम–पुंज हुआ तब नष्ट अखिल संस्कृति हो उठी अशोक।
किसी का हमने छीना नहीं प्रकृति का रहा पालना यही।
हमारी जन्म भूमि थी यहीं, कही से हम आये थे नहीं।
जिये तो सदा उसीके लिये, यही अभिमान रहे यह हर्ष
निछावार करदें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारत वर्ष।''[5]

देश के एक सुदीर्घ इतिहास को लिपिबद्ध करने का सफल प्रयास किया गया है। राष्ट्रीय भावनाओं के सुन्दर प्रतिपाद्‌य में भारतीय सांस्कृतिक गौरव के सभी उपकरण चरम भावोत्कर्ष पर पहुंच गये है देश–चिन्तन का यह गाम्भीर्य सांस्कृतिक रूप प्रसाद के अतिरिक्त अन्यत्र दुलर्भ है। अपने युग की पीड़ा ने उन्हें अतीत की ओर उन्मुख किया, उनके इस अतीत चिन्तन ने भारत के उज्ज्वल भविष्य भाल की मंगल रेखा छिपी हुयी है। अतीत की पृष्ठभूमि पर वर्तमान की समस्याओं के समाधान प्रस्तुत कर उन्होंने जीवंत प्रगति का भी साहित्य का सुन्दरतम सृजन किया है।

प्रसाद जी ने अतीत के दर्पण में वर्तमान की समस्यायें देखी। उनकी देश भक्ति क्षणिक या उन्माद पूर्ण नहीं वह गम्भीरतम् है। उन्के व्यक्तित्व के अनुकूल है।''[6] प्रसाद जी सांस्कृतिक व्यक्तित्व के गम्भीर प्राणी थे। उनके राष्ट्रीय गीतों में अंतर की ध्वनि एक गम्भीर संस्कार निष्ठ चिन्तन की भांति हुयी है न कि मंच की संस्ती भावुकतामयी चंचल परिवर्तित मान्यताओं की तरह। इस दृष्टि से देखा जाए तो छायावादी कवियों में प्रसाद और निराला दो ही व्यक्ति सांस्कृतिक राष्ट्रीयता के संदेश वाहक के रूप में दृष्टिगत होंगे।''[6]

येशोला की प्रतिध्वनि और शेर सिंह का शस्त्र समर्पण कविता भी भारत की गौरवमयी संस्कृति से अनुप्राणित है इन कविताओं के आधार ऐतिहासिक है। सिक्खों के पराक्रम और शौर्य के साथ युद्ध करने पर भी अंत में शेर सिंह को शस्त्र समपर्ण करना पड़ा।

''आज विजयी हो तुम
और है पराजित हम
तुम तो कहांगे, इतिहास भी कहेगा यही
किन्तु यह विजय प्रशंसा भी मन की
एक छलना है
वीर भूमि पंचनंद में वीरता से रिक्त नहीं''[7]

पेशोला की प्रतिध्वनि भी अतीत के गौरव का ही चित्र प्रस्तुत करती है। प्रताप की वीरता अब शेष नहीं रही जन्मभूमि की रक्षा का गुरूतर भार अब कौन वहन करेगा।

''किन्तु वह ध्वनि कहां?
गौरव की काया पड़ी माया है प्रताप की
वही मेवाड़
किन्तु आज प्रतिध्वनि कहां''[8]

''अशोक की चिन्ता में कलिंग विजय पर भीषण नर संहार देखकर सम्राट अशोक के विचलित मन की विरक्ति बौद्ध दर्शन से प्रभावित होकर व्यक्त हुई हैं। हिंसा के आधार पर मानव मन पर शासन नहीं किया जा सकता। स्नेह और ममत्व से ही मानव मन पर शासन किया जा सकता है। क्षणिक राग रंग को त्यागकर कवि ने मानव के प्रति स्नेह की याचना की है।

''भुनती वसुधा तपते नग
दुखिया है सारा अग जग
कंटक मिलते है प्रति पग
जलती सिकता का यह मग
बह जा बन करूणा तरंग
जलता है यह जीवन पतंग''[9]

भुनती वसुधा पर प्रेम और करूणा की रसधार को आह्वान कर विश्व मंगल की कामना की है। ''अपने मानसिक झंझावत में अशोक इस महान आदर्श की स्थापना अंत में करता है। चित्त की अंतवृत्तियों का सफल प्रकाशन कवि ने किया है। हृदय में उठने वाले विचारों का प्रतिपादन मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की कुशलता का परिचायक है। बौद्ध दर्शन की करूणा पर आधारित इस कविता में प्रसाद जी ने सूक्ष्मतम भावननाओं का अंकन किया है और कवि का गतिशील रूप उसमें देखा जा सकता है।''[10]

प्रसाद जी ने ऐतिहासिक घटनाओं के द्वारा राष्ट्रीय भावनाओं का सफल अंकन किया है। महाराणा का महत्व ''एक ऐतिहासिक काव्य है जिसमें राष्ट्र प्रेम की भावना निहित है। प्रसाद जी अपने राष्ट्र गौरव के प्रति सदा जाग्रत और गौरवान्वित रहे उन्होंने एक विदेशी के मुख से प्रताप का यशोगान कराया है।

''सच्चा साधक है सपूत निज देश का
मुक्त पवन में पला हुआ वह वीर है''[11]

प्रताप का उदार क्षत्रियोचित और मनस्वी संदेश – ''स्त्री को क्षत्रिय देते दुख नहीं उनके हृदय की विशालता का द्योतक है।

इसी संदर्भ में यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि भारत का प्राचीन सांस्कृतिक गौरव, बौद्धयुग, मौर्य युग और गुप्त युग में ही सुरक्षित है। ये स्वर्ण युग रहे है भारत के। अतः प्रसाद ने बुद्ध काल से हर्ष काल तक को अपना प्रतिपाद्य विषय बनाया।

वस्तुतः प्रसाद की काव्य–धारा भावात्मक रूप में देश के सांस्कृतिक उपादानों को लेकर चली है उनकी राष्ट्रीय कविताओं का प्रगतिशील स्वरूप युगीन समस्याओं का समाधान कारक होने के कारण चिरन्तन है। समसामयिक आन्दोलनों का जो भावात्मक उत्कर्ष राष्ट्र प्रेम के रू॰ में अनके काव्य में उभर आया है वही उनके काव्य की प्रगतिकामी दृष्टि का परिचय देता है।

**संदर्भ**

1. शर्मा, डा. विनय मोहन. कवि प्रसाद–आंसू तथा अन्य कृतियां. पृष्ठ – 45.
2. मिश्र, डा. राजेन्द्र. आधुनिक हिन्दी काव्य. पृष्ठ – 227.
3. प्रसाद, जयशंकर. 'चन्द्रगुप्त' नाटक. पृष्ठ – 89.
4. प्रसाद, जयशंकर. 'चन्द्रगुप्त' नाटक. पृष्ठ – 177.
5. प्रसाद, जयशंकर. स्कन्दगुप्त. पृष्ठ – 5.
6. पांडेय, डा. सुधाकर. प्रसाद की कवितायें : साहित्यिक अध्ययन. पृष्ठ – 15.
7. प्रसाद, जयशंकर. लहर. पृष्ठ – 52.
8. प्रसाद, जयशंकर. लहर. पृष्ठ – 55.
9. प्रसाद, जयशंकर. लहर. पृष्ठ – 50.
10. डा. प्रेमशंकर. प्रसाद का काव्य. पृष्ठ – 201.
11. प्रसाद, जयशंकर. महाराणा का महत्व. पृष्ठ – 19.